एक और विचारणा है, "ये स्वीकार कर सकते है कि इस दुनिया में कोई सच्ची खुशी नहीं है, लेकिन ये स्वीकार करना होगा कि दुनिया दुःख, यातना और पीड़ा से भरी है।" इसलिए, इस विषय की गहराई में चर्चा करना आवश्यक है।

पति, पत्नी, पुत्र, पति के दोस्त, नौकर और पड़ोसी है। उन सभी को एक दूसरे से स्नेह है। खबर आती है - पति दुर्घटना में मर चुका है। आइए सबकी प्रतिक्रियाएँ देखते है। पत्नी बुरी तरह से रोने लगती है। वो दुःख बर्दाश्त नही कर पाती और बेहोश हो जाती है। बेटा रो रहा है। दोस्त बेहद दुःखी महसूस करता है। नौकर उदास लग रहा है। पड़ोसी टिप्पणी करता है कि यह बहुत बुरी खबर है, लेकिन सामान्य रूप से अपने नियमित काम करते रहता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

थोडी देर बाद फिर खबर आती है - पति जिंदा है! यह गलत पहचान का मामला था। आइए फिर से सबकी प्रतिक्रियाएँ देखते है। पत्नी बहुत खुश हो जाती है और असहनीय खुशी के कारण फिर से बेहोश हो जाती है। बेटा खुशी के आँसू बहा देता है। मित्र बेहद खुश महसूस करता है। नौकर हंसमुख लग रहा है। पड़ोसी टिप्पणी करता है कि यह बहुत अच्छी खबर है और सामान्य रूप से अपने नियमित काम करते रहता है।

इसका मतलब ये है, "आपको किसी भी मायिक वस्तु के पाने में जितनी सीमा का सुख होता हैं, उस मायिक वस्तु के खोने पर उतनी ही सीमा का दुःख होता है। सुख और दुःख की मात्रा बिल्कुल समान होती है।"

इस प्रकार मायिक वस्तुओं या व्यक्तियों में खुशी मानने की हमारी कल्पना में ही दुःख की उत्पत्ति है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132